- वित्तीय वर्ष 2016-17 में गाँधी स्मृति संग्रहालय, मितिहरवा (पश्चिम चम्पारण) में चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने पर संग्रहालय को विशेष रुप से विस्तारित किया गया। इस संग्रहालय द्वारा महात्मा गाँधी के 150वीं जयंती वर्ष के अवसर पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 18-19 मार्च, 2019 को किया गया।
- वैशाली में बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय एवं स्मृति स्तूप निर्माण हेतु कुल 301.40 करोड़ रुपये स्वीकृत राषि से निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया। स्मृति स्तूप निर्माण के अतिरिक्त रकबा 1.84 एकड़ भूमि प्रवेश द्वार, निकास एवं सम्पर्क सड़क निर्माण हेतु कुल प्राक्कलित राशि 2.04 करोड़ रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई।
- लोक नायक जय प्रकाश नारायण स्मृति भवन-सह-पुस्तकालय, सिताबदियारा, सारण का भवन निर्माण कार्य वर्ष 2019-20 में कराया गया।
- वित्तीय वर्ष 2017-18 में चेचर संग्रहालय, चेचर, वैशाली का बिहार सरकार द्वारा अधिग्रहण किया गया। संग्रहालय की दीर्घाओं को आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण बनाने के उद्देश्य से वित्तीय वर्ष 2019-20 में दीर्घाओं को पुनर्संयोजित किया गया।
- वित्तीय वर्ष 2017-18 में चन्द्रशेखर सिंह संग्रहालय, जमुई के नये भवन का निर्माण किया गया।
- वित्तीय वर्ष 2018-19 में महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालय, दरभंगा में पुरावशेष एवं कलाकृतियों के संरक्षण का कार्य राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (NRLC), लखनऊ द्वारा प्रारम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत कुल 155 कलाकृतियों का उपचारात्मक संरक्षण कार्य किया जाना है, जिसमें 95 कलाकृतियों का संरक्षण कार्य किया जा चुका है।
- महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालय, दरभंगा में रक्षित हाथी दाँत से निर्मित पुरावशेषों/कलाकृतियों के प्रदर्शन के लिए पर्यटन विभाग को दिये गये कैफेटेरिया के अतिरिक्त भू-खण्ड को वापस कराकर उस पर दीर्घाकक्ष के विस्तारीकरण, स्थल का विकास, फर्नीचर गैलेरी, शो-केस निर्माण आदि कार्य स्वीकृत राशि 12.03 करोड़ रु0 से कराया जा रहा है।
- वित्तीय वर्ष 2018-19 में बाबू कुंवर सिंह स्मृति संग्रहालय जगदीशपुर (भोजपुर) में **"बाबू वीर कुंवर सिंह विजयोत्सव"** का भव्य आयोजन किया गया।
- वित्तीय वर्ष 2018-19 में हपरा संग्रहालय का निर्माण कार्य पूर्ण कर भवन प्रशासी विभाग द्वारा हस्तगत किया गया।
- मिथिला ललित संग्रहालय, सौराठ, मधुबनी के भवन निर्माण का कार्य 1326.613 लाख रुपये तथा लखीसराय संग्रहालय भवन का निर्माण 27.22 करोड़ रुपये की स्वीकृत राषि से प्रारम्भ किया गया।
- विभाग द्वारा वर्ष 2015 से 2020 तक 53 करोड़ रु0 की लागत से 235 कार्यक्रमों का आयोजन विभिन्न स्तर पर राज्य में सांस्कृतिक वातावरण निर्माण हेतु किया गया।
- चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के अवसर पर बिहार विरासत विकास समिति, पटना द्वारा "हेरिटेज वाक" आयोजित किया गया। शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से संबंधित जानकारियों का प्रचार एवं प्रसार किया गया।
- राज्य में पुरातत्व निदेशालय द्वारा कई महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों के उत्खनन करवाए गये जिनमें चिरांद (सारण), बलिराजगढ़ (मधुबनी), तेल्हाड़ा (नालन्दा), चेचर (वैशाली), देवनगढ़ (नवादा), लाली पहाड़ी (लखीसराय), लारी (अरवल) आदि प्रमुख रुप से उल्लेखनीय है एवं जिनकी उपलब्धियाँ अत्यन्त उत्साहवर्द्धक एवं ज्ञानवर्द्धक है।
- चौसा (बक्सर) की खुदाई में एक मृण्मय टाईल जड़ित गुप्तकालीन मंदिर स्थापत्य संरचना अवशेष प्रकाश में आया। चेचर (वैशाली) की खुदाई से प्रागैतिहासिक अवशेष प्राप्त हुए। तेल्हाड़ा (नालन्दा) की खुदाई से विस्तृत भू-भाग में फैले एक बौद्ध महाविहार के भग्नावशेष एवं अन्य महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ प्राप्त हुई।
- बिहार विरासत विकास समिति, पटना के माध्यम से कुटुम्बा (औरंगाबाद) में उत्खनन करवाया गया। दरभंगा जिलान्तर्गत दरभंगा, बेनीपुर, मणिगाली, बहादुरपुर, हायाघाट, बहेड़ी एवं बिरौल प्रखण्ड एवं पूर्णियाँ जिलान्तर्गत बनमनखी, बड़हरा एवं धमदाहा प्रखण्ड में मानवीय अधिवास से संबंधित स्थलों का पुरातात्विक अन्वेषण कार्य किया गया।
- चिरांद में डेक्कन कॉलेज, पूणे तथा पुरातत्व निदेशालय के संयुक्त तत्वाधान में उत्खनन का कार्य कराया गया, जहाँ से नवपाषाण काल के अवशेष प्राप्त हुए। अरवल जिलान्तर्गत लारी में उत्खनन कार्य बिहार विकास विरासत समिति द्वारा करवाया गया। यहाँ से गुप्तकालीन अवशेष प्राप्त हुए।
- लखीसराय जिलान्तर्गत लाल पहाड़ी स्थल पर उत्खनन का कार्य शांति निकेतन विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल एवं पुरातत्व निदेशालय के अन्तर्गत गठित समिति (बिहार विकास विरासत समिति) के संयुक्त तत्वाधान में उत्खनन कार्य करवाया गया, जहां से बौद्ध महाविहार के अवशेष प्राप्त हुए। इस स्थल पर भिक्षुओं के रहने के लिये कमरे, संघाराम के चारों ओर की दीवार, मंदिर और स्तूप आदि के महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए हैं। पुरास्थल में बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियाँ, मुद्राएँ एवं अभिलेख भी प्राप्त हुए।
- नवादा जिलान्तर्गत देवनगढ़, पुरातात्विक स्थल से कुषाण काल की संरचनाओं तथा प्रतिमाओं की प्राप्ति हुई। उत्खनित स्थलों के विकास के लिए तेल्हाड़ा (नालन्दा) उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों के प्रदर्शन हेतु "साईट-म्यूजियम" का निर्माण प्रारम्भ किया गया।
- चिरांद (सारण) में "प्रागैतिहासिक संग्रहालय" के भवन निर्माण का कार्य पूरा किया गया।
- 13वें वित्त आयोग की अनुशंसित राशि से महत्वपूर्ण चयनित स्मारकों/पुरास्थलों के पुरातात्विक संरक्षण एवं स्थल विकास के कार्य किए गए, जिनमें पार्वती पहाड़ (नवादा), दाफत्तु (जहानाबाद), अपसढ़ (नवादा), प्रीतम टीला (नालन्दा), तेतरावाँ (नालन्दा) में कार्य पूर्ण किया गया। पुरातत्व स्थल खेरी (भागलपुर), अलावल खाँ का मकबरा (सासाराम), कटरागढ़ (मुजफ्फरपुर), आरा हाउस (आरा) तथा मसही (कैमूर) में चहारदिवारी का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया। सैयद इब्राहिम हुसैन खान के मकबरे का जीर्णोद्धार कार्य पूर्ण किया गया।
- बिहार विरासत विकास समिति ने नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर के साथ संयुक्त रुप से इस स्थल का पुरातात्विक अन्वेषण का कार्य किया गया। राजगीर की ऐतिहासिक नगरी जो चारों ओर से छोटी पहाड़ियों से घिरी थी, को सभी दिशाओं से पहाड़ी के उपर विशालकाय शिलाखंडों से एक रक्षा दीवार बनायी गयी थी, हालांकि इस दीवार की लम्बाई, चैड़ाई और वर्तमान स्थिति आदि के बारे में सही जानकारी उपलब्ध नहीं थी। पुरातात्विक अन्वेषण के दौरान इस दीवार के चप्पे-चप्पे का अन्वेषण किया गया और सारी जानकारी एकत्रित की गयी, साथ ही पूरे प्राचीर का छायाचित्रण भी कराया गया।
- राजगीर में प्राचीन ऐतिहासिक मूर्तियाँ यत्र-तत्र बिखरी पड़ी है, किन्तु इन मूर्तियों की वैज्ञानिक सूची उपलब्ध नहीं थी। इन मूर्तियों में हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि अन्य धर्म की मूर्तियाँ भी शामिल है। अन्वेषण के दौरान इस सभी मूर्तियों के माप, कालखंड, बनावट आदि के संदर्भ में सूचनाएँ एकत्रित कर ली गयी और इनका छायाचित्रण भी करा लिया गया। अन्य पुरातात्विक संरचनाएँ राजगीर की पहाड़ियों पर स्थित बौद्ध स्तूप, पुरातात्विक सरंचानाओं, जैन मंदिरों, तथा अन्य के संबंध में भी सूचीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया।
- विरासत समिति ने भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण की अनुमति प्राप्त कर बिहार में ह्वेनसांग द्वारा की गयी यात्राओं के आधार पर पुरातात्विक अन्वेषण का कार्य प्रारंभ किया। इस क्रम में पटना से राजगीर एवं राजगीर से गया सेक्टर में नये पुरास्थलों की खोज की गयी। पाटलीपुत्र में एक प्राचीन स्तूप की पहचान की गयी। साथ ही बराबर, गया, नागार्जुनी पहाड़ियों पर भी नये पुरास्थलों की पहचान की गयी।
- विरासत समिति द्वारा बिहार के चार महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नगरों यथा पाटलिपुत्र, वैशाली, गया और राजगीर में विरासत स्थलों के प्रति सर्वसाधारण में जागरुकता पैदा करने हेतु नियमित रुप से हेरिटेज वॉक का आयोजन कराया गया। इन यात्राओं में लोगों ने अत्यधिक रुचि लेते हुए बड़ी संख्या में भाग लिया।
- कला-चेतना से संबंधित व्याख्यान विरासत समिति ने अमूर्त विरासत में जागरुकता पैदा करने हेतु भी कई कार्यक्रमों का आयोजन कराया। इनमें पेन्टिंग से संबंधित कार्यशाला, जिसमें देश भर के प्रसिद्ध चित्रकार भी शामिल थे, का आयोजन कराया गया। इस श्रृंखला के अंतर्गत व्याख्यान-सह-प्रदर्शनों का भी आयोजन कराया गया। इन आयोजनों में प्रसिद्ध नृत्यांगना पद्मश्री शोभना नारायण द्वारा कत्थक के इतिहास पर व्याख्यान दिया गया एवं कत्थक नृत्य की बारीकियों को नृत्य करके दिखलाया गया। प्रसिद्ध चित्रकारा श्रीमती मीनाक्षी झा बनर्जी द्वारा मधुबनी चित्रकला विषय पर व्याख्यान एवं प्रदर्शन किया गया।
- "बिहार प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल अवशेष तथा कलानिधि अधिनियम, 1976" के अंतर्गत राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2015 तक 43 पुरातात्विक स्थल/स्मारक को सुरक्षित घोषित किया गया जबकि वर्ष 2020 तक कुल 51 पुरातात्विक स्थल/स्मारक को सुरक्षित घोषित किया गया।
- पुरास्थलों में अरवल जिलान्तर्गत लारी, लखीसराय अवस्थित पुरातात्विक स्थल लाली पहाड़ी (जयनगर), बिछवे पहाड़ एवं पुरातात्विक स्थल सतसंडा पहाड़, नोनगढ़, घोषी कुंडी पहाड़ एवं लय, गया जिलान्तर्गत कमर अली सुल्तान दरगाह एवं दुल्हिन मंदिर को सुरक्षित घोषित किया गया।
- राज्य के 29 जिलों में व्यायामशाला-सह-खेल भवन के निर्माण की स्वीकृति दी गयी। इसमें से 24 जिलों में निर्माण कार्य पूर्ण एवं हस्तांतरित है, 01 जिला में कार्य प्रगति पर है तथा 04 जिलों में कार्यारंभ किया जाना शेष है।
- राज्य निवासी खिलाड़ी के द्वारा ओलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त किये जाने पर उन्हें पूर्व में निर्धारित 5.00 लाख रु0 को बढ़ाकर 2.00 करोड़ रु0 की राशि से सम्मानित किये जाने का प्रावधान किया गया। जबकि ओलम्पिक खेलों में रजत व कांस्य पदक प्राप्ति के साथ ही विश्व कप, राष्ट्रमंडलीय खेलों, एशियन खेलों में भी पदक प्राप्त करने पर सम्मानजनक राशि प्रदान किये जाने का प्रावधान किया गया।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रौशन करने वाले बिहार के खिलाड़ियों ने राष्ट्रमंडल खेल, आस्ट्रेलिया में सुश्री श्रेयषी सिंह द्वारा निशानेबाजी में रजत पदक प्राप्त किया गया। श्री शरद कुमार विश्व पैरा-एथलेटिक्स, लंदन में देश का प्रतिनिधित्व करते हुए रजत पदक प्राप्त किया एवं सुश्री शमा परवीन ने 5वीं एशियन कबड्डी चैम्पियनशिप, ईरान में स्वर्ण पदक विजेता दल की सदस्य रहीं। सुश्री श्रेयषी सिंह तथा श्री शरद कुमार को 50.00 लाख रु0 एवं सुश्री शमा परवीन को 31.00 लाख रु0 से इस योजना के तहत पुरस्कृत किया गया।
- एकलव्य राज्य आवासीय खेल प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे खिलाड़ियों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न खेल स्पर्द्धाओं में स्वर्ण पदक 14, रजत पदक 29 एवं कांस्य पदक 20 कुल 63 पदक प्राप्त कर राज्य का नाम गौरवान्वित किया।
- वार्षिक खेल कार्यक्रम में व्यापक रुप से बदलाव कर पहली बार वर्ष 2017-18 स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा निर्धारित सभी तीनों आयु वर्ग क्रमषः अंडर-19, अंडर-17 एवं अंडर-14 वर्ष की राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं के 27 खेलों में बिहार दल की प्रतिभागिता सुनिश्चित की गई। साथ ही इस हेतु राशि 4.00 करोड़ रु0 से वृद्धि कर 7.39 करोड़ रु0 की गई।
- स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया में वर्ष 2014-15 से 2020 तक कुल 18 स्वर्ण, 35 रजत एवं 73 कांस्य कुल 126 पदक राज्य के खिलाड़ियों द्वारा प्राप्त कर राज्य को गौरवान्वित किया गया।
- राज्य में वर्ष 2016 में राष्ट्रीय महिला हैण्डबॉल, लॉन टेनिस एवं हॉकी प्रतियोगिता एवं वर्ष 2018 में राष्ट्रीय विद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बिहार क्रमशः कबड्डी में उप विजेता एवं हैण्डबॉल में विजेता होने का गौरव प्राप्त किया। राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता के उत्कृष्ट आयोजन हेतु School Games Federation of India (SGFI) संगठन द्वारा सर्वश्रेष्ठ आयोजन की ट्रॉफी बिहार को प्रदान की गई।
- वर्ष 2017-18 में सरकार द्वारा खिलाड़ी कल्याण कोष मद में कुल 30.00 लाख रु0 से बढ़ाकर 50.00 लाख रु0 सहायक अनुदान के रुप में प्रदान करने का प्रावधान किया गया।
- पाटलिपुत्र खेल परिसर, पटना एवं रेनवो मैदान का अधिग्रहण-पाटलिपुत्र खेल परिसर से सटे रेनवो मैदान का अधिग्रहण किया गया। जिसमें 4000 दर्शकों वाला वातानुकूलित बहुद्देशीय इण्डोर हॉल के साथ अन्य खेल अवसंरचना का निर्माण किये जाने की कार्रवाई प्रारंभ की गयी।
- वर्ष 2016 से वर्ष 2020 तक कुल 36 जिलों में मल्टी जिम, ओपेन जिम उपकरण एवं खेल उपकरणों का अधिष्ठापन किया गया।
- पंचायत स्तर पर खेल के विकास हेतु मिशन मानव विकास योजना के अंतर्गत खेल मैदानों को विकसित करने का निर्णय लिया गया।
- बिहार पुलिस खेल-कूद नीति, 2013 का गठन किया गया।
- राज्य में खेल को बढावा एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से बिहार उत्कृष्ट खिलाड़ियों की नियुक्ति नियमावली, 2014 का गठन किया। इस नियमावली के तहत 119 खिलाड़ियों की नियुक्ति की गई है।
- 7 प्रमंडलीय जिला मुख्यालयों में (पटना एवं मुजफ्फरपुर को छोड़कर) प्रेक्षागृह-सह-आर्ट गैलरी का निर्माण योजना के तहत 600 क्षमता का आधुनिक प्रेक्षागृह एवं चाक्षुष कला की प्रदर्शनी हेतु आर्ट गैलरी का निर्माण कराया जा रहा है। इसके अतिरिक्त बेगूसराय में भी प्रेक्षागृह-सह-आर्ट गैलरी का निर्माण कराया जा रहा है। इनमें से सहरसा, मुंगेर, दरभंगा, पूर्णिया, गया, सारण एवं बेगूसराय में भवन निर्माण एवं वीडियो प्रोजेक्शन का कार्य पूर्ण कर लिया गया है।

वर्ष 2020 से अबतक

- कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न स्थिति में राज्य के कलाकारों के कला का सम्मान करते हुए विभाग द्वारा 639 कलाकारों को 7.92 लाख रु0 प्रोत्साहन राषि प्रदान किए गए।
- राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह के क्रम में मुजफ्फरपुर प्रवास के दौरान रमना मोहल्ला स्थित स्वर्गीय गया बाबू के जिस मकान में महात्मा गाँधी जी ठहरे थे, की जमीन पर स्मारक संग्रहालय निर्माण हेतु उक्त जमीन पर अवस्थित परिसम्पत्तियाँ, रकबा- 0.04955 हेक्टेयर (0.1225 एकड़) जमीन के बिहार रैयती भूमि लीज नीति, 2014 के तहत अधिग्रहण का कार्य पूर्ण हो चुका है। सम्पर्क पथ की चैड़ाई मानक से कम होने के आलोक में संग्रहालय भवन निर्माण हेतु बिहार भवन उपविधि - 2014 के प्रावधान के शिथिलीकरण हेतु सक्षम प्राधिकार से सहमती प्राप्त करने की कार्रवाई की जा रही है।
- महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा तिब्बत से लाई गयी दुर्लभ पाण्डुलिपियों बौद्ध एवं संस्कृत पाण्डुलिपियों के अध्ययन, शोध, विषयान्तरण एवं प्रकाशन हेतु केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी से MoU किया गया है। इसमें कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है और कार्य पाँच वर्षों में पूर्ण करने का लक्ष्य है।
- मिथिला ललित संग्रहालय, सौराठ, मधुबनी के नये भवन का निर्माण पूर्ण किया जा चुका है।
- लखीसराय संग्रहालय, लखीसराय के भवन का निर्माण अनुमोदित राशि 27.22 करोड़ रु0 से किया गया है।
- भागलपुर संग्रहालय को "संग्रहालय-सह-अंग सांस्कृतिक केन्द्र" के रुप में विकसित करने का कार्य 2.29 करोड़ रु0 की स्वीकृत राशि से किया गया है।
- सत्र 2022-23 में तेल्हाड़ा (नालन्दा), चांदन नदी के किनारे अवस्थित पुरातात्विक स्थल भदरिया (बांका), गुआरी डीह (भागलपुर) एवं ह्वेनसांग की यात्रा पथ की पुरातात्विक अन्वेषण हेतु अनुज्ञप्ति प्रदान करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली को अनुरोध पत्र सहित विहित प्रपत्र प्रेषित किया गया है।
- भागलपुर, दरभंगा एवं पूर्णिया जिला के बनमनखी, बरहरा एवं धमदाहा प्रखण्ड में अवस्थित पुरातात्विक स्थलों का पुरातात्विक अन्वेषण कराया गया है।
- पुरातत्व निदेशालय द्वारा कई जनोपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन कराया गया है जिनमें एनसिएन्ट यूनिवर्सिटीज ऑफ बिहार, प्रोटेक्टेड मॉन्यूमेंट ऑफ बिहार एवं मॉन्यूमेंट्स ऑफ बिहार जैसी पुस्तकें शामिल हैं।
- पुरास्थलों एवं स्मारकों का संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण राज्य सरकार द्वारा वर्तमान में 54 पुरातात्विक स्थल/स्मारक सुरक्षित घोषित किए गए हैं। हाल के वर्षों में सुरक्षित किए गये पुरास्थलों में नोनगढ़ (लखीसराय), भदरिया में चांदन नदी के किनारे प्राप्त हुए पुरातात्विक स्थल/अवशेष (बाँका), गुआरी डीह बरियारपुर (गुआरी, भागलपुर) प्रमुख रुप से उल्लेखनीय है।
- तेल्हाड़ा स्थल संग्रहालय का निर्माण 8.57 करोड़ रु0 की स्वीकृत राशि से कराया गया है।
- बाबा कारु खिड़हर संग्रहालय, सहरसा के संग्रहालय भवन निर्माण हेतु समाहर्त्ता, सहरसा द्वारा उपलब्ध करायी गयी भूमि पर संग्रहालय भवन निर्माण हेतु कार्रवाई की जा रही है।
- कुछ पुरातात्विक स्थलों को चिह्नित कर घेराबन्दी के कार्य करवाए जा रहे हैं, जिनमें कोटेश्वर धाम (गया), चौरागढ़ (बक्सर), अहिल्या स्थान (दरभंगा) नेपाली मंदिर (हाजीपुर), लय (लखीसराय), हरेश्वर नाथ मंदिर (द्वालख मधुबनी). कमल जैन मंदिर (पटना सिटी), ताराडीह (बोधगया) के नाम उल्लेखनीय हैं।
- मिथिला चित्रकला संस्थान, मधुबनी के भवन का निर्माण कार्य पूर्ण कर सर्टिफिकेट कोर्स एवं डिग्री कोर्स प्रारम्भ कर दिया गया है।
- चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष के अवसर पर बेतिया, मोतिहारी एवं मुजफ्फरपुर में 2000 व्यक्तियों की क्षमता वाले गाँधी स्मृति नगर भवन का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है।
- **बिहार खेल विश्वविद्यालय अधिनियम, 2021** पारित किया जा चुका है। विष्वविद्यालय के स्थापना व संचालन हेतु विभिन्न कोटि के 31 पदों के सृजन की स्वीकृति की स्वीकृति दिनांक 08.11.2022 को मंत्रिपरिषद की बैठक में दी गयी। विष्वविद्यालय का संचालन प्रारम्भ करने की प्रक्रिया की जा रही है।
- मोईनुलहक स्टेडियम, पटना को विश्व स्तरीय क्रिकेट स्टेडियम के रुप में विकसित किये जाने हेतु पुनर्निर्माण कराने के लिए भवन निर्माण विभाग द्वारा चयनित परामर्शी के द्वारा ड्राइंग/डिजाईन एवं प्राक्कलन का कार्य पूर्ण कर लिया गया है।
- एकलव्य राज्य आवासीय खेल प्रषिक्षण केंद्र - वर्तमान में राज्य के 23 जिलों में 49 प्रशिक्षण केंद्र स्वीकृत, जिसमें वर्तमान में 39 प्रशिक्षण केंद्र संचालित है। कुल 10 नये केंद्रो की स्वीकृति प्रदान की गई है।
- 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के स्तर पर आयोजित खेल सम्मान समारोह में राष्ट्रीय सम्मानित किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में कुल 4.25 करोड़ रु0 की स्वीकृत राशि से 400 खिलाड़ियों एवं 11 प्रशिक्षकों को पुरस्कृत एवं सम्मानित करने हेतु दी गयी है।
- खिलाड़ी कल्याण कोष से वित्तीय वर्ष 2022-23 में 56 खिलाड़ियों को 14 लाख रु0 की राशि दी गयी है।
- राजगीर में राज्य स्पोर्ट्स एकेडमी-सह-अंतर्राष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम के निर्माण हेतु 90 एकड़ भूमि अधिग्रहित कर 740.0 करोड़ रु0 की लागत से निर्माण कार्य प्रगति पर है जिसे जून, 2024 तक पूर्ण किए जाने का लक्ष्य है।
- मुख्यमंत्री खेल विकास योजनांतर्गत मल्टी जिम, ओपेन जिम उपकरण एवं खेल उपकरणों का अधिष्ठापन हेतु वित्तीय वर्ष 2023-24 में अबतक 12 जिलों में 2.47 करोड़ रु0 की स्वीकृति दी जा चुकी है।
- **बिहार पुलिस खेल-कूद नीति 2013** को निरस्त करते हुए बिहार उत्कृष्ट खिलाड़ियों की सीधी नियुक्ति नियमावली 2023 का गठन किया गया है।
- जनवरी, 2024 में बिहार उत्कृष्ट खिलाड़ियों की सीधी नियुक्ति नियमावली 2023 के तहत कुल 71 खलाड़ियों की नियुक्ति की गयी है। इनमें बाल विकास परियोजना पदाधिकारी के पद पर 01, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी के पद पर 01, पुलिस अवर निरीक्षक के पद पर 29 तथा निम्नवर्गीय लिपिक के पद पर 40 खिलाड़ियों की नियुक्ति की गयी है।
- अभी तक खेलों से संबंधित कार्य कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के अधीन किए जाते है। खेलों को बढ़ावा देने के लिए राज्य में अलग से विभाग के गठन का निर्णय लिया गया। इस निर्णय के आलोक में मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग की अधिसूचना संख्या 37 दिनांक 09.01.2024 द्वारा बिहार कार्यपालिक नियमावली, 1979 (समय-समय पर यथा संशोधित) में संशोधन करते हुए 45वें विभाग के रुप में "खेल विभाग" का गठन किया गया। इस विभाग को आवंटित प्रमुख कार्य हैं:- खेलकूद के विकास से संबंधित सभी कार्य, खिलाड़ियों के कल्याण से संबंधित सभी कार्य, खेलकूद से संबंधित आधारभूत संरचना से संबंधित सभी कार्य, खेल विश्वविद्यालय से संबंधित सभी कार्य, बिहार राज्य खेल प्राधिकरण आदि।

Nov. 2024

बिहार सरकार

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग

बिहार सरकार

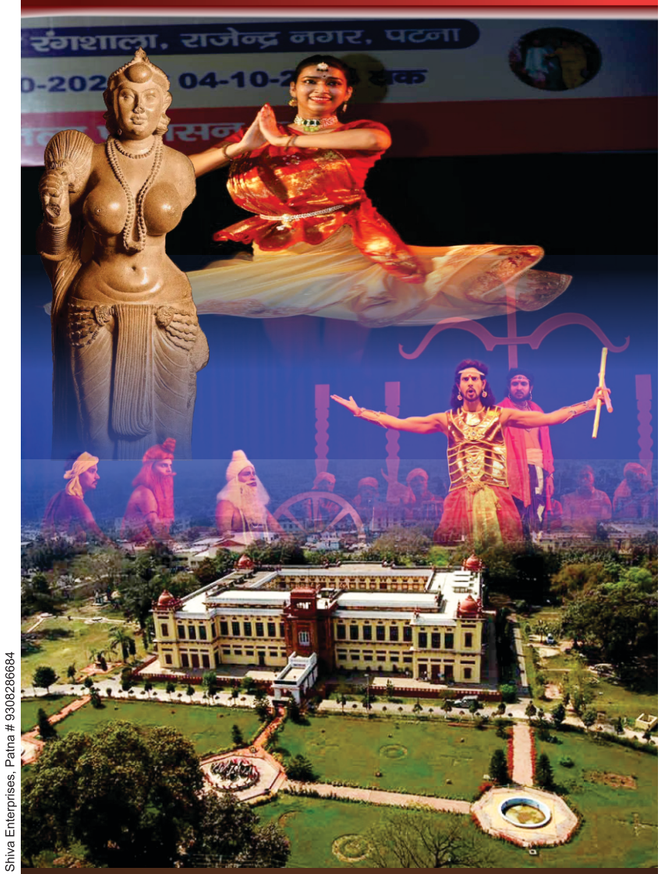

कला, एवं संस्कृति विभाग
तथा
सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग
बिहार सरकार

Design & Printed by Shiva Enterprises, Patna # 9308286684

कला एवं संस्कृति विभाग

बिहार 'ज्ञान' एवं 'मोक्ष' की धरती है। बिहार का स्वर्णिम एवं गौरवशाली इतिहास रहा है। यहां की विरासत समृद्ध एवं संपन्न रही है। यह धरती बौद्ध एवं जैन धर्म की जन्मस्थली रही है। यहीं पर महात्मा बुद्ध एवं भगवान महावीर ने मानव को 'अहिंसा' का पाठ पढ़ाया था। यह माता सीता की प्राकट्य भूमि रही है। बिहार को महर्षि वाल्मीकि की भूमि के रूप में भी देखा जाता है। दषमेष पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज का जन्म भी यहीं हुआ है।

राजनीतिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण से भारत के इतिहास में बिहार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बिहार मगध एवं लिच्छवी शासकों का केंद्र रहा है। उस काल में बिहार शक्ति, संस्कृति एवं शिक्षा के प्रतीक के रूप में जाना जाता रहा है। मौर्य काल एवं गुप्त काल भारतीय इतिहास में स्वर्णिम काल माने जाते हैं। इसी धरती ने दुनिया को पहला 'सम्राट'-सम्राट अशोक भी दिया। लिच्छवी राजाओं ने दुनिया को 'पहला लोकतांत्रिक गणराज्य' बिहार दिया। बिहार की भूमि ज्ञान की भूमि रही है। साहित्य, विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र एवं भारतीय दर्शन में बिहार का योगदान श्रेष्ठ रहा है। चाणक्य के अर्थशास्त्र से लेकर आर्यभट्ट के शून्य के आविष्कार की कहानी बिहार की भूमि से जुड़ी है। नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय प्राचीनकाल में न सिर्फ भारतवर्ष बल्कि पूरे विश्व के ज्ञान के केंद्र के रूप में जाने जाते थें। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को यूनेस्को द्वारा स्थल वल्ड हेरिटेज साईट घोषित किया जा चुका है।

बिहार एक ऐसा अनूठा प्रदेश है जहाँ भगवान भास्कर की पूजा होती है। छठ महापर्व के दौरान यहां डूबते सूरज की पूजा पहले की जाती है। इसके उपरांत उगते सूरज का वंदन किया जाता है। यह महापर्व अपने आप में एक महत्वपूर्ण संदेश का वाहक है। बिहार की धरती पर कई पौराणिक महत्ता से जुड़े मंदिर अवस्थित हैं। पूरे देश से पिण्डदान करने लोग 'गया जी' आते हैं। सूफी संस्कृति का बिहार में एक विशेष स्थान रहा है। यह राज्य विविधताओं से भरा रहा है। पूरे भारत में बिहार ही एक ऐसा राज्य है जहां अंतर्राष्ट्रीय मानक का 'बिहार संग्रहालय' अवस्थित है।

बिहार अपनी समृद्ध विरासत तथा कला एवं संस्कृति के लिए विख्यात रहा है। बिहार के रूप में मिले इस धरोहर और यहां की संस्कृति के संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास हेतु राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने और पूरे देश में एक मजबूत सांस्कृतिक जीवंतता बनाने के लिए माननीय **मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी** के कुशल नेतृत्व में राज्य सरकार निरंतर कार्य कर रही है। संस्कृति को संजोने से विविधता, सहनशीलता तथा समरसता की विरासत मजबूत होगी। माननीय मुख्यमंत्री जी का मानना है कि इन प्रयासों से युवाओं को अपने इतिहास और विरासत को जानने और समझने का मौका मिलेगा। अपने अतीत को जानकर ही हम अपना भविष्य संवार सकते है।

कला-संस्कृति के संरक्षण एवं खेलकूद के विकास के लिए सरकार कृत संकल्पित रही है। इसी कारण कला, संस्कृति एवं युवा विभाग का बजट में भी काफी बढ़ोतरी हुई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में विभाग का बजट 331.05 करोड़ रुपये हो गया है।

वर्ष 2005 में सरकार में आने के बाद बिहार की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित, संरक्षित रखने, सुरुचि पूर्ण ढंग से दर्षकों के लिए प्रदर्शित करने एवं अक्षुण्ण रुप से आने वाली पीढ़ी को सौंपने हेतु राज्य सरकार ने पूरे राज्य में वर्तमान में कुल 29 संग्रहालय स्थापित किए हैं तथा 5 संग्रहालयों के भवन का नवनिर्माण कार्य कराया गया है। राज्य के संग्रहालयों के आधुनिक तकनीकी एवं नव संग्रहालयवाद की अवधारणा के अनुरुप पुनर्सयोजन हेतु संग्रहालयों को राशि उपलब्ध करायी गयी है। संग्रहालय विकास विषयक निर्धारित रोडमैप के अनुसार क्षेत्रीय संग्रहालयों के विकास एवं दीर्घावधि के पुनर्सयोजन का काम किया जा रहा है। राज्य के संग्रहालयों में उद्यान का विकास किया जा रहा है, ताकि संग्रहालय परिसर में दर्शकों के लिए सुखद वातावरण निर्मित किया जा सके। इसके अलावा प्रमंडलीय जिला मुख्यालयों में प्रेक्षागृह-सह-आर्ट गैलरी का निर्माण तथा जिलों में व्यायमशाला-सह-खेल भवन का निर्माण विभाग द्वारा कराया जा रहा है।

इस प्रकार राज्य सरकार द्वारा विगत 18 वर्षों में राज्य में खेलों के विकास के लिए भी काफी काम किये गये हैं। राज्य सरकार की दूरदर्शी सोच का यह परिणाम है कि राज्य में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम तथा खेल विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। राज्य में खेलों के विकास एवं खिलाड़ियों को हर तरह की सुविधा मुहैया कराने हेतु अलग से 'खेल विभाग' के गठन का निर्णय लिया गया है।

वर्ष 2005 से 2010

- बिहार की कला एवं संस्कृति के सर्वांगीण विकास के प्रति संकल्पित राज्य सरकार ने उत्कृष्ट कलाकारों को सम्मानित करने हेतु वर्ष 2006 में "कलाकार सम्मान पुरस्कार" प्रारंभ किया तथा ख्यातिप्राप्त असमर्थ और अस्वथ्य कलाकारों को **"कलाकार कल्याण कोष"** से आर्थिक सहायता देने का प्रावधान किया।
- वर्ष 2006 में भगवान बुद्ध के 2550वें महापरिनिर्वाण वर्ष के अवसर पर कई चरणों में राजगृह, बोधगया, विक्रमशिला, केसरिया, वैशाली तथा पटना में कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया। जननायक कर्पूरी ठाकुर स्मृति संग्रहालय परिसर में ग्रामीण लोक कला संस्थान की स्थापना की स्वीकृति दी गयी। अगमकुओं का शीतला मंदिर, सासाराम में अलावल खाँ का किला तथा चिरांद ठपरा के पुरातात्विक स्थल के चरणबद्ध विकास कार्य शुरू किये गये और विष्णुपद, गया के पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण हेतु योजना स्वीकृत की गयी।
- राज्य में विलुप्त होती जा रही सांस्कृतिक गतिविधि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय युवा महोत्सव-2006 का आयोजन पहली बार इस राज्य में सफलतापूर्वक किया गया, जिसमें लगभग सभी राज्यों की प्रतिभागिता हुई। इसके अतिरिक्त स्थानीय गाँधी मैदान, पटना में दो दिनों का दशहरा सांस्कृतिक उत्सव-2006 का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मानित कलाकारों की भागीदारी हुई।
- राज्य के सभी जिले एवं अनुमंडल में, सभी सुविधाओं से सुसज्जित स्टेडियम बनाने की योजना प्रारम्भ की गई। इसके लिए इस वित्तीय वर्ष में 5 करोड़ रु0 का प्रावधान किया गया। राज्य का खेल कैलेन्डर बनाकर हर जिला में विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया।
- वर्ष 2007 में भगवान बुद्ध के 2550वें महापरिनिर्वाण वर्ष पर राज्य के सभी प्रमुख स्थलों पर सांस्कृतिक कार्यकम एवं सेमिनार का आयोजन किया गया।
- वर्ष 2007 में बिहार के सांस्कृतिक कलाकारों के एक दल ने मॉरीशस परिभ्रमण किया एवं वहाँ बिहार की लोक कलाओं का प्रदर्शन किया। साथ ही, बिहारी मूल के मॉरीशस में रह रहे लोगों के लिए **"ट्रैस युअर रुट"** नामक एक योजना बनायी गई।
- राज्य में खेल को बढावा एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से बिहार उत्कृष्ट खिलाड़ियों की नियुक्ति नियमावली, 2009 का गठन किया। इस नियमावली के तहत कुल 158 खिलाड़ियों की नियुक्ति की गयी।
- राज्य के उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में सामाजिक समरसता कायम करने के लिए सांस्कृतिक एवं खेल-कूद कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष 2007 में किया गया।
- वर्ष 2007 में बिहार के 144 अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय श्रेणी के खिलाड़ियों एवं चार प्रशिक्षकों को पुरस्कृत किया गया।
- वर्ष 2008 में "मुख्यमंत्री खेल विकास योजना" का शुभारंभ किया गया। वर्ष 2009 में इस योजना अन्तर्गत 125 आउटडोर स्टेडियम के निर्माण की स्वीकृति दी गयी।

  मुख्यमंत्री खेल विकास योजना अन्तर्गत राज्य में खेल का वातावरण तैयार करने हेतु खेल अवसंरचना विकसित करने के क्रम में विभिन्न जिलों के अधीन प्रखण्ड स्तर पर स्टेडियम निर्माण हेतु वर्ष 2008-09 से अब तक 370 स्टेडियम निर्माण की स्वीकृत दी गई है, जिसमें 168 स्टेडियमों का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। शेष 55 स्टेडियमों का कार्य निर्माणाधीन है तथा 93 स्टेडियमों का निर्माण आरम्भ करने हेतु कार्रवाई की जा रही है।
- पटना संग्रहालय का प्रकाश संयोजन एवं इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण किया गया।
- वर्ष 2009 में पहली बार बिहार बाल फिल्म महोत्सव का पटना, गया, भागलपुर एवं मुजफ्फरपुर में आयोजन किया गया।
- समाजवादी नेता एवं प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी शहीद सूरज नारायण सिंह की स्मृति में पटना में "सूरज नारायण सिंह स्मृति संग्रहालय" की स्थापना की गयी।
- वर्ष 2010 में चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा के परिसर में मिथिला थीमेटिक पार्क का निर्माण किया गया।
- 28 फरवरी, 2010 को देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के 125वीं जयन्ती पर स्मारक सिक्कों का माननीय उप राष्ट्रपति द्वारा लोकार्पण किया गया।
- नवोदित कलाकारों को अवसर प्रदान करने और स्थापित कलाकारों के माध्यम से लोगों को स्वस्थ मनोरंजन पहुंचाने हेतु वर्ष 2010 में पटना और प्रमण्डलीय मुख्यालयों में "शनि बहार और शुक्र गुलजार" कार्यक्रम प्रारंभ किया गया।
- वर्ष 2010 में प्रत्येक वर्ष 22 मार्च को "बिहार दिवस" मनाने का निर्णय लिया गया। यह दिवस बिहार राज्य के गठन को चिह्नित करता है।

वर्ष 2010 से 2015

- वर्ष 2011 में बिहारी अस्मिता और बिहारी पहचान को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से बिहार की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में बिहार दिवस का भव्य आयोजन राज्य के भीतर और बाहर करने हेतु कार्य प्रारम्भ किया गया।
- वर्ष 2012 में श्री सत्यनारायण द्वारा लिखित **'मेरे भारत के कंठहार, तुझको शत-शत वंदन बिहार'** को राज्यगीत के रूप में अपनाया गया।
- वर्ष 2012 में प्रेमचन्द रंगशाला को जीर्णोद्धार कर नया स्वरुप दिया गया।
- वर्ष 2012 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का "बिहार संग्रहालय" के निर्माण की कार्रवाई प्रारम्भ की गयी।
- बिहार शताब्दी वर्ष के अवसर पर वर्ष 2012 में पटना संग्रहालय परिसर में विशेष कलाकृति का निर्माण किया गया।
- वर्ष 2012 में तेल्हाड़ा (नालंदा) के अतिरिक्त चैसागढ़ (बक्सर) एवं सलेमपुर (मधुबनी) में उत्खनन कार्य प्रारंभ किया गया।
- वर्ष 2012 में पटना में अंतर्राष्ट्रीय मानक के पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स का लोकार्पण किया गया।
- दलित और अनुसूचित जाति के कलाकारों को राज्य की संस्कृति की मुख्यधारा में लाने के लिए 10-15 जून, 2012 तक प्रेमचंद रंगशाला और पटना संग्रहालय में शताब्दी लोकोत्सव का आयोजन किया गया।
- वर्ष 2012 में इलाहाबाद और जयपुर में **'बिहार महोत्सव'** का आयोजन किया गया।
- वर्ष 2012 में कला मंगल कार्यक्रम के माध्यम से चाक्षुष कलाकारों को कला प्रदर्शनी हेतु एक फोरम उपलब्ध कराया गया।
- राजधानी वाटिका में हर दूसरे शनिवार को **'संगीत विहान'** कार्यक्रम अन्तर्गत दिसम्बर 2012 से स्तरीय कलाकारों का कार्यक्रम का आयोजन प्रारम्भ किया गया।
- वर्ष 2013 में डाक्यूमेंटेशन एवं प्रकाशन योजनान्तर्गत पटना कलम, बिहार प्रदेश की मिथिला चित्रकला, समकालीन कला, मंजूषा कला, दीना भद्री, राजा सल्हेस, बुकानन के प्रतिवेदन (5 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण), संरक्षित पुरातात्विक स्थल आदि पुस्तकों का मुद्रण कराया गया।
- वर्ष 2012-13 का बिहार कला पुरस्कार योजनान्तर्गत चाक्षुष एवं प्रदर्श कला के लिए विभिन्न विधाओं में 10 वरिष्ठ एवं 10 युवा कलाकार को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त दो राष्ट्रीय स्तर एवं एक राज्य स्तर पर जीवनपर्यन्त सेवाओं के लिए पुरस्कार/ सम्मान प्रदान किया गया।
- मुंगेर प्रमंडल के मुख्यालय में नवीन संग्रहालय भवन निर्माण कार्य पूर्ण होने के पश्चात् 23 मई 2013 को लोकार्पण किया गया।
- वर्ष 2013 में भेलावर (जहानाबाद), मेन (गया), दुब्बा (गया), तुलसीगढ़ (नालन्दा) देववर्णाक (आरा), सहियार (बक्सर), वराह (नालन्दा) में पुरातात्विक शेड का निर्माण कार्य स्वीकृत किया गया।
- वर्ष 2013 में सितांब दियारा (छपरा) में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की स्मृति में भवन, पुस्तकालय एवं संग्रहालय निर्माण की योजना स्वीकृत की गई।
- स्मृति भवन-सह-पुस्तकालय के निर्माण के पश्चात इसमें उनसे संबंधित 550 पुस्तकों, 2000 अभिलेखों एवं चित्रों का संग्रहण किया गया है।
- वर्ष 2014 में नालंदा जिला में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम-सह-स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स के निर्माण हेतु पिल्खी में 14.42 करोड़ रु0 की लागत से 89.97 एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया गया।
- वर्ष 2014 में मानपुर, गया में स्टेडियम निर्माण एवं गया के हरिहर सुब्रह्मण्यम स्टेडियम के जीर्णोद्धार कार्य हेतु राशि की स्वीकृति प्रदान की गई।
- वर्ष 2014 में **'संस्कृति और राज्य', 'बिहार के रंगमंच', 'बिहार में थारु संस्कृति', 'लोक गाथाओं में महिला मुक्ति का प्रश्न', 'सूफी आंदोलन', 'मिथिला चित्रकला एवं महिला सशक्तीकरण'** आदि पुस्तकों के मुद्रण का निर्णय लिया गया।
- वर्ष 2014 में नालंदा जिलान्तर्गत राजगीर में फिल्म सिटी के निर्माण के लिए सैद्धान्तिक सहमति के साथ 20 एकड़ भूमि के अधिग्रहण का निर्णय लिया गया।
- वर्ष 2014 में तेल्हाड़ा (नालन्दा), चैसा (बक्सर), चेचर (वैशाली) एवं कुटुम्बा (गया) के पुरातात्विक स्थलों पर उत्खनन का कार्य कराया गया।
- मधुबनी जिलान्तर्गत बलिराजगढ़ में वर्ष 2013-14 में राज्य सरकार के प्रयास से उत्खनन का कार्य किया गया था, जहाँ से प्राचीरयुक्त प्राचीन शहरी संस्कृति प्रकाश में आया एवं यहाँ से प्रचुर मात्रा में उत्तरी काले पॉलिश मृदभाण्ड (N.B.P.W) प्राप्त हुए, जो ईसा पूर्व द्वितीय सदी के हैं।
- वर्ष 2014-15 में देश के विभिन्न भागों में सम्पन्न विभिन्न खेलों की राष्ट्रीय विद्यालय प्रतियोगिताओं में बिहार राज्य को क्रमशः 03 स्वर्ण पदक, 08 रजत पदक तथा 14 कांस्य पदक सहित कुल 25 पदक प्राप्त हुए। पदक विजेताओं की राष्ट्रीय खेल दिवस, 29 अगस्त 2015 को राज्य खेल सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया।
- पंचायत स्तर पर खेल के विकास हेतु मिशन मानव विकास योजना के अन्तर्गत खेल मैदानों को विकसित करने का निर्णय लिया गया।
- वर्ष 2014 में सैयद इब्राहिम हुसैन खाँ, फतहगंज, भागलपुर का जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण की स्वीकृति के साथ ही बेगूसराय जिला स्थित गढ़पुरा में श्रीकृष्ण मेमोरियल स्थल (नमक सत्याग्रह स्थल) के विकास एवं पुस्तकालय भवन निर्माण की स्वीकृति दी गई।
- पुराने बांकीपुर जेल परिसर को राज्य सरकार द्वारा बुद्ध स्मृति पार्क के रुप में विकसित किया गया। बुद्ध स्मृति पार्क परिसर में **'बुद्ध स्मृति पार्क संग्रहालय'** का निर्माण कार्य पूरा किया गया तथा संग्रहालय में लेजर शो कार्यक्रम का आरम्भ किया गया।
- गोलघर, पटना के संरचना के अन्दर लेजर शो कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।
- कला, संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा जमुई, मुंगेर, नवादा तथा दरभंगा में नये संग्रहालय भवनों का निर्माण कार्य पूरा किया गया।
- बहुद्देशीय सांस्कृतिक केन्द्र परिसर, पटना का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया एवं उसमें राज्य कला गैलरी की स्थापना की गई।
- तेरहवें वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित राशि से तेतरार्थी (नालन्दा), पार्वती पहाड़ (नवादा), प्रीतम माउन्ट (नालन्दा), अपसढ़ गढ़ (नवादा), बारा (नालन्दा), दाप्तु (जहानाबाद), पुरातात्विक स्थलों/स्मारकों के संरक्षण एवं विकास हेतु कुल 17.25 करोड़ रु0 की प्रशासनिक स्वीकृति तथा टेकारी किला (गया), नेपाली मंदिर (हाजीपुर), जलालगढ़ किला (पूर्णियाँ), तारादीह (बोधगया), द्वालस्य शिव मंदिर (मधुबनी), दाउदनगर किला (औरंगाबाद), चिरान्द (सारण), पुरातात्विक स्थलों/स्मारकों के संरक्षण एवं विकास हेतु 21.84 करोड़ रु0 की योजना की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई।
- जॉर्ज ऑरवेल की जन्म स्थली (मोतिहारी) के जीर्णोद्धार एवं संरक्षण का कार्य पूरा किया गया।
- चाक्षुष कला के क्षेत्र में बिहार में मिथिला चित्रकला एवं अन्य लोक कलाओं के समग्र विकास, अध्ययन, शोध, अभिलेखीकरण, पोषण, प्रचार-प्रसार एवं समन्वय करने तथा राज्य के स्वस्थ लोक संस्कृति लोक परंपराओं के संवर्द्धन एवं संरक्षण करने हेतु राज्य सरकार द्वारा मिथिला चित्रकला संस्थान की स्थापना करने का निर्णय लिया गया तथा इसके लिए 6.5 एकड़ भूमि हस्तांतरित की गई। संस्थान की गतिविधियों के सम्यक रुप से संचालन हेतु सामान्य परिषद् एवं कार्यकारिणी परिषद् का गठन किया गया। साथ ही संस्थान का सोसाईटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम-1860 के अधीन निबंधन किया गया।
- राज्य में फिल्म एवं टेलीविजन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम की स्थापना की गई। राज्य सरकार द्वारा राजगीर में फिल्म सिटी की स्थापना का निर्णय लिया गया।
- फिल्म प्रोत्साहन प्रारुप का निर्माण किया जा चुका है। मंत्रिपरिषद से अनुमोदन हेतु आवष्यक कार्रवाई की जा रही है।

वर्ष 2015 से 2020

- चाक्षुष एवं प्रदर्श कला में अकादमी/बिहार कला पुरस्कार-कला के क्षेत्र में राज्य/ राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर चुके विभिन्न विधाओं में कलाकारों को बिहार कला दिवस (18 अक्टूबर) के अवसर पर वित्तीय वर्ष 2018-19 में 18 एवं 2019-20 में 19 कलाकारों को बिहार कला पुरस्कार से विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।
- विभाग द्वारा बिहार के **100 रत्न, मिथिला चित्रकला, पटना कलम, दीना भद्री, मंजूषा चित्रकला, बिहार की समकालीन कला, राजा सल्हेस, बिहार में थारु संस्कृति, लोक गाथाओं में महिला मुक्ति** का प्रश्न आदि पुस्तक का प्रकाशन कराया गया।
- श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज की 350वें प्रकाशोत्सव के अवसर पर वर्ष 2016 में सांस्कृतिक वातावरण के निर्माण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस अवसर पर Guru Govind Singh Sahib & Sikhism in Bihar पुस्तक का प्रकाशन तीन भाषाओं गुरुमुखी, हिन्दी एवं अंग्रेजी में पंजाब डिजिटल लाईब्रेरी के सहयोग से कराया गया।
- प्रत्येक वर्ष विभाग द्वारा उग्रवाद प्रभावित 19 जिलों में **'आपकी सरकार आपके द्वार'** योजना के तहत उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र के लोगों को समाज की मुख्य धारा से सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से जोड़ने हेतु 2-2 लाख की राशि उपलब्ध करायी गयी।
- स्थापित कलाकारों को शुक्रगुलजार एवं नवोदित कलाकार को शनिबहार के अंतर्गत भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना में मंच प्रदान किया गया तथा संगीत विहान में शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को एवं संगीत संध्या कार्यक्रम में लोक एवं सुगम संगीत के कलाकारों को राजधानी वाटिका, पटना में कार्यक्रम प्रस्तुति के अवसर प्रदान किये गये।
- दिनांक 19 से 25 फरवरी, 2016 तक पटना फिल्म फेस्टिवल, 2016 का आयोजन किया गया।
- महनार, वैशाली में 28 से 29 जनवरी, 2016 तक महनार महोत्सव का आयोजन कराया गया।
- बेगूसराय में आशीर्वाद अंतर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आयोजन कराया गया।
- दिनांक 18 से 22 फरवरी, 2016 तक गांधी मैदान में डेस्टिनेशन **बिहार एक्सपो-2016** में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराया गया।
- दिनांक 21 मई, 2016 को थर्ड जेंडर को सम्मान एवं समाज में प्रतिष्ठा हेतु प्रथम किन्नर महोत्सव का आयोजन जिला प्रशासन के माध्यम से कराया गया।
- चम्पारण सत्याग्रह स्मृति दिवस के अवसर पर 9 एवं 10 अप्रैल, 2016 पूर्वी चम्पारण जिलान्तर्गत कोटवा प्रखंड के जसौली पट्टी में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया।
- चामरग्राहिणी यक्षिणी की प्राप्ति के 100 वर्ष प्रारंभ होने के उपलक्ष्य में दिनांक 18 अक्टूबर, 2016 को बिहार कला दिवस का आयोजन राज्य के सभी जिलों में कराया गया। पटना के अधिवेशन भवन में भव्य बिहार कला दिवस समारोह का आयोजन कराया गया।
- कला मंगल श्रृंखला में प्रत्येक माह के द्वितीय मंगलवार को एक सप्ताह के लिए राज्य के कलाकारों के कृतियों की प्रदर्शनी करायी गयी।
- श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज की 350वें प्रकाशोत्सव के अवसर पर विभाग द्वारा 31 दिसम्बर, 2016 से 5 जनवरी, 2017 तक पटना के विभिन्न प्रेक्षागृह यथा- श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल, भारतीय नृत्य कला मंदिर, बहुद्देशीय सांस्कृतिक परिसर, रविन्द्र भवन एवं प्रेमचंद रंगशाला में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन कराया गया, जिसमें पूरे भारत वर्ष से तथा देश-विदेश के राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गयी।
- 22 से 25 दिसम्बर, 2017 तक शुकराना समारोह का आयोजन किया गया साथ ही महात्मा गांधी के चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों के कलाकृतियों की प्रदर्शनी तथा कार्यशाला बिहार संग्रहालय, पटना में दिनांक 02 से 06 अक्टूबर, 2017 तक आयोजित किया गया। चंपारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष के अवसर पर गाँधी पनोरमा फिल्म फेस्टिवल का आयोजन, पटना, वैशाली, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, बेतिया एवं गया में कराया गया।
- 490 करोड़ रु0 की लागत से पटना में **सम्राट अशोक कन्वेंशन सेन्टर** का निर्माण करवाया गया है। इसमें स्थित **ज्ञान भवन** का उद्घाटन 10 अप्रैल 2017 को, **बापू सभागार** का उद्घाटन 02 अक्टूबर 2017 को तथा **सम्पदा द्वार** का उद्घाटन 21 मई 2018 को माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार जी द्वारा किया गया।
- राज्य को सांस्कृतिक परंपरा, शिल्प, लोक कला एवं स्वान-पान से अन्य राज्यों के जनसमुदाय को परिचय कराने एवं इससे जोड़ने के उद्देश्य से दिनांक 22 से 24 नवम्बर, 2018 तक गोवा में बिहार महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।
- दिनांक 19 से 25 अक्टूबर, 2018 को कुल्लू, हिमाचल प्रदेश में आयोजित कुल्लू दशहरा उत्सव तथा दिनांक 26 से 31 जनवरी, 2018 तक लाल किला, दिल्ली में मनाये गये भारत पर्व के अवसर पर बिहार राज्य से सांस्कृतिक दल की भागीदारी करायी गयी।
- पटना लिटरेचर फेस्टिवल दिनांक 1 से 3 फरवरी, 2019 को आयोजन कराया गया, जिसमें देश/विदेश से कलामर्मज्ञ/साहित्यकारों की भागीदारी हुई।
- वर्ष 2019 में पूर्वी चम्पारण जिला में लुक महाराज महोत्सव, लखौरा महोत्सव, कुढ़क्षेत्र महोत्सव, वन शक्ति माई महोत्सव, सजही महोत्सव, बाबा सोमेश्वर नाथ महोत्सव, बैरिया देवी महोत्सव तथा भुर्दयाँ बाबा महोत्सव का आयोजन कराया गया।
- 17 जनवरी, 2018 को कजाकिस्तान के सांस्कृतिक दल का कार्यक्रम आयोजित कराया गया।
- दिनांक 12 से 14 दिसम्बर, 2019 तक बापू सभागार पटना में OCTAV-2019 का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में उत्तर पूर्वी राज्यों के लगभग 200 कलाकारों ने अपना कला प्रदर्शन किया। इसके अतिरिक्त भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद्, नई दिल्ली द्वारा छठे अंतर्राष्ट्रीय लोक नृत्य एवं संगीत महोत्सव में दो देशों के कलाकार दलों का कार्यक्रम पटना में कराया गया।
- अहमदाबाद, गुजरात में दिनांक 28 फरवरी से 01 मार्च, 2020 तक बिहार महोत्सव का आयोजन किया गया।
- मिथिला लोक चित्रकला के संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास हेतु मिथिला चित्रकला संस्थान, मधुबनी में स्थापित किया गया। चित्रकला संस्थान के भवन का निर्माण कार्य 27.49 करोड़ की लागत से प्रारम्भ किया गया।
- राज्य में सांस्कृतिक संरचना निर्माण योजना के तहत 600 क्षमतायुक्त प्रेक्षागृह-सह-आर्ट गैलरी निर्माण हेतु दरभंगा में 1275.96 लाख, सहरसा में 1330.46 लाख, मुंगेर में 1204.18 लाख, बेगूसराय में 819.00 लाख एवं पूर्णिया प्रमंडलीय जिला मुख्यालय में 1359.31 लाख की स्वीकृति दी गई। सारण एवं बेगूसराय में निर्माण हेतु स्वीकृति की कार्रवाई प्रारम्भ की गई। गया एवं भागलपुर प्रमंडलीय जिला मुख्यालय में भी भूमि चिह्नित करने की कार्रवाई आरम्भ की गयी।
- चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष के अवसर पर बेतिया, मोतिहारी एवं मुजफ्फरपुर में 2000 व्यक्तियों की क्षमता वाले गाँधी स्मृति नगर भवन के निर्माण के निर्णय के आलोक में मुजफ्फरपुर के लिए 8190.00 लाख रु0, बेतिया के लिए 4119.10 लाख रु0 एवं मोतिहारी के लिए 4122.33 लाख रु0 की स्वीकृति दी गई।
- भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना के ऊपर दो अतिरिक्त तल्ले का निर्माण 4.61 करोड़ की लागत से कराया गया तथा 1.14 करोड़ की लागत से विद्युतीकरण का कार्य कराया गया।
- बिहार में फिल्म के विकास हेतु फिल्म सिटी के निर्माण हेतु राजगीर में 20.00 एकड़ भूमि अधिग्रहित किया गया तथा भूमि के डिमार्केशन/बाउंड्रीवॉल के निर्माण का कार्य किया गया।
- भारतीय उप-महाद्वीप के इतिहास निर्माण एवं संस्कृति के विकास में बिहार के योगदान से देशी-विदेशी पर्यटकों, दर्शकों एवं आमजन को परिचित करने के उद्देश्य से, राजधानी पटना के जवाहर लाल नेहरु मार्ग (बेली रोड) के दक्षिणी भाग में बंगला नंबर 2 से 7 तक के लगभग 13.5 एकड़ भू-भाग पर एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के **बिहार संग्रहालय का निर्माण** कराया गया। बिहार संग्रहालय का निर्माण 517.34 करोड़ रु0 की पुनरीक्षित पप्रशासनिक स्वीकृत राशि से कराया गया है। अगस्त, 2015 में बिहार संग्रहालय के बाल खंड सहित, ओरिएंटेशन गैलरी एवं प्री-शो थिएटर दर्शकों के लिए खोला गया तथा दिनांक 02.10.2017 को बिहार संग्रहालय का लोकार्पण किया गया।
- पटना संग्रहालय सहित राज्य के 10 संग्रहालयों में संग्रहित पुरावशेष एवं कलाकृतियों का डिजीटल डॉक्यूमेन्टेशन वित्तीय वर्ष 2015-16 में किया गया। वहीं वर्ष 2016-17 में पटना संग्रहालय में तीन नई दीर्घाओं का संयोजन किया गया। पटना संग्रहालय में संग्रहित चार्ल्स डेनियल के चित्रों का रासायनिक संरक्षण एवं प्रदर्शन का कार्य किया गया।
- इस संग्रहालय के पुरावशेष एवं कलाकृतियों के संरक्षण का कार्य राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (NRLC), लखनऊ द्वारा प्रारम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत कुल 66 कलाकृतियों का उपचारात्मक संरक्षण कार्य किया जाना है, जिसमें 55 कलाकृतियों का संरक्षण कार्य किया जा चुका है, शेष का संरक्षण कार्य किया जा रहा है। पटना संग्रहालय को भी बिहार संग्रहालय के अनुरुप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संग्रहालय के रुप में विकसित करने की कार्रवाई की जा रही है।
- वर्ष 2016-17 में मुंगेर संग्रहालय मुंगेर की स्थापना एवं नव निर्मित भवन में संग्रहालय का उद्घाटन किया गया।
- चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा में वित्तीय वर्ष 2016-17 में नई आदर्श चित्रकला दीर्घा का संयोजन किया गया। साथ ही क्षतिग्रस्त पेंटिंग्स एवं पाण्डुलिपियों का रासायनिक संरक्षण एवं वैज्ञानिक भंडारण की व्यवस्था की गई। संग्रहालय भवन का जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य 2.09 करोड़ की स्वीकृत राशि से किया गया।